राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की काव्यगत विशेषताएँ

प्रो0 रश्मि कुमार
हिंदी और आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ

संक्षिप्त सारः मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'भारत–भारती' सन 1912 में प्रकाशित हुई । इसने गुप्त जी को खड़ी बोली के लोकप्रिय कवि के रूप में पहचान दिलाई । 'भारत–भारती' ने राष्ट्रीय–भावना को जागृत करने में महत्वपूर्ण अभिनीत की । इस काव्य–रचना में भारत की पराधीनता की बेड़ियाँ तोड़ने का आह्वान किया गया है । मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत–भारती' के माध्यम से राष्ट्रीयता का जो शंखनाद किया बाद में उसे माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह 'दिनकर' और सुभद्रा कुमारी चौहान आदि ने अनंत में गुंजरित कर दिया । मैथिलीशरण गुप्त के प्रयासों के कारण राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय चेतना हिंदी कविता के प्रमुख विषय बन गए । जिस समय भारत का स्वतंत्रता आंदोलन अपने पूरे जोर पर था उस समय गुप्त जी ने अपनी काव्य रचना 'भारत –भारती' लिखकर भारतीय जनमानस के सम्मुख उसके अतीत, वर्तमान और भविष्य का ऐसा सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया कि नवयुवक अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने लगे । 'भारत–भारती' के कारण ही गुप्त जी राष्ट्रकवि (1936) बने और इसी पुस्तक के कारण उन्हें संसद–सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया और पद्मभूषण (1954) से सुशोभित किया गया ।

शब्द संकेत : मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय चेतना आंदोलन राष्ट्रकवि पद्मभूषण ।

विषय प्रवेशः

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि थे। उनके काव्य में द्विवेदी युगीन समाज सुधार की भावना, राष्ट्रीय भावना, जन–जागरण की प्रवृत्ति एवं युगबोध विद्यमान है । मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय चेतना न केवल द्विवेदी युग बल्कि सम्पूर्ण हिंदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है । संभवतः इसी कारण उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि प्रदान की गई ।गुप्त जी ने गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की मानवतावाद से प्रभावित होकर करुणा, त्याग आदि के गीत गाए और गांधीवाद का प्रभाव ग्रहण करके सांप्रदायिक एकता, सत्य और अहिंसा का प्रतिपादन किया । मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'भारत–भारती' सन 1912 में प्रकाशित हुई । इसने गुप्त जी को खड़ी बोली के लोकप्रिय कवि के रूप में पहचान दिलाई । 'भारत–भारती' ने राष्ट्रीय–भावना को जागृत करने में महत्वपूर्ण अभिनीत की । इस काव्य–रचना में भारत की पराधीनता की बेड़ियाँ तोड़ने का आह्वान किया गया है । मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत–भारती' के माध्यम से राष्ट्रीयता का जो शंखनाद किया बाद में उसे माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह 'दिनकर' और सुभद्रा कुमारी चौहान आदि ने अनंत में गुंजरित कर दिया । मैथिलीशरण गुप्त के प्रयासों के कारण राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय चेतना हिंदी कविता के प्रमुख विषय बन गए । जिस समय भारत का स्वतंत्रता आंदोलन अपने पूरे जोर पर था उस समय गुप्त जी ने अपनी काव्य रचना 'भारत –भारती' लिखकर भारतीय जनमानस के सम्मुख उसके अतीत, वर्तमान और भविष्य का ऐसा सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया कि नवयुवक अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने लगे । 'भारत–भारती' के कारण ही गुप्त जी राष्ट्रकवि (1936) बने और इसी पुस्तक के कारण उन्हें संसद–सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया और पद्मभूषण (1954) से सुशोभित किया गया ।

भारतेंदु युग में राष्ट्रभक्ति की भावना राजभक्ति और देशभक्ति के साथ–साथ चलती रही थी क्योंकि उस समय तक अंग्रेजों का शासन अपने चरमोत्कर्ष पर था और उससे मुक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती थी । फिर भी तत्कालीन शासन–व्यवस्था के प्रति असंतोष भारतेंदु साहित्य में आने लगा था । द्विवेदी युग के काव्य में मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना अत्यधिक मुखरित होकर सामने आने लगी थी । द्विवेदी युग में राष्ट्रप्रेम की यह भावना मुख्य रूप से प्रबंध–काव्यों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है जिनमें प्रायः प्राचीन कथानक को कल्पना के समवेश से नवीन रूप प्रदान करके प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । यही कारण है कि मैथिलीशरण गुप्त ने तुलसीकृत 'रामचरितमानस' के आधार पर रचित महाकाव्य 'साकेत' का नामकरण कथानायक राम के नाम पर न करके उनकी मातृभूमि साकेत (अयोध्या) के नाम पर किया है । 1930 ईस्वी में महात्मा गांधी के भारत में सक्रिय राजनीति में प्रवेश करने के पश्चात स्वतंत्रता आंदोलन की रूपरेखा में व्यापक बदलाव आया । राष्ट्रीय आंदोलन का प्रसार अब कुलीन वर्ग तक सीमित नहीं रहा बल्कि वह झोपड़ियों तक फैलने लगा । विभिन्न भाषाओं के कवि भी इससे अछूते नहीं रहे और उन्होंने अपनी कविताओं में राष्ट्रीय भावना को स्थान दिया । इन कवियों ने न केवल लोगों को जागृत करने के लिए कविताएं लिखी बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग भी लिया और कई बार जेल भी गए । मैथिलीशरण गुप्त का नाम ऐसे कवियों में प्रमुखता से लिया जा सकता है । भारतीय संस्कृति की जितनी व्यापक तथा प्रभावशाली अभिव्यक्ति मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में मिलती है उतनी अन्य किसी आधुनिक कवि की काव्य में दुर्लभ है । सांस्कृतिक कवि की दृष्टि से मैथिलीशरण गुप्त वाल्मीकि, व्यास और तुलसीदास की परंपरा में आते हैं । राष्ट्रवादी भावना की दृष्टिकोण से मैथिलीशरण गुप्त रवीन्द्रनाथ, इकबाल और नजरुल इस्लाम की परंपरा के कवि थे । संभवतः इसी कारण उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि से अभिषिक्त किया गया है ।मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय भावना उच्च कोटि की थी । उनका संपूर्ण साहित्य भारत की सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है । उन्होंने भारत को एक इकाई के रूप में देखा । उनकी दृष्टि में हिंदुओं का अर्थ है हिंदुस्तान में रहने वाला व भारत माता के चरणों में सर्वस्व समर्पित करने वाला । गुप्त जी ने स्पष्ट शब्दों में गौरव के साथ इस बात की घोषणा की हैः–

"हम हैं हिंदू की संतान ।जिए हमारा हिंदुस्तान । ।

मैथिलीशरण गुप्त जी धर्म के आधार पर अच्छे बुरे का निर्णय नहीं करते थे । उनकी दृष्टि में मानवता ही किसी व्यक्ति के आंकलन की सबसे बड़ी कसौटी होता है ।"हिंदू हो या मुसलमान हो नीच रहेगा फिर भी नीच मनुष्यत्व सबसे ऊँचा है, । मान्य मही–मंडल के बीच ।भारतीय नवयुवकों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने के लिए प्रेरित करते हुए गुप्त जी लिखे हैं– **"अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है "** ।

गुप्त जी अपने काव्य में लोगों को प्रजातंत्र के वास्तविक अर्थ को बताते हुए उन्हें प्रजातंत्र प्राप्ति के लिए उत्साहित करते हैं :–"राजा प्रजा का पात्र है, वह एक प्रतिनिधि मात्र है ।यदि वह प्रजा पालक नहीं, तो त्याज्य है ।हम दूसरा राजा चुनें, जो सब तरह सबकी । सुनेकारण, प्रजा का ही असल में राज्य है ।गुप्त जी अपने साहित्य में साहित्य–कर्म के वास्तविक उद्देश्य को प्रकट करते हुए लिखे हैं :–

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए ।

उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए ।।

मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय भावना में सामाजिक सरोकार भी सम्मिलित हैं । वे सभी सामाजिक रूढ़ियों को दूर करके एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना चाहते थे । उनका मानना था कि आपसी वैमनस्य को दूर करके ही राष्ट्रीय एकता के लक्ष्य को पाया जा सकता है । सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और पारस्परिक सहयोग बनाए रखने के लिए समाज के लोगों को प्रेरित करते हुए मैथिलीशरण गुप्त जी लिखे हैं :–

"जग को दिखा दो यह कि अब भी हम सजीव सशक्त हैं ।
रखते अभी तक नाड़ियों में पूर्वजों का रक्त हैं ।।

"राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने के लिए मैथिलीशरण गुप्त की हिंदी भाषा के राष्ट्रभाषा होने की पैरवी करते थे । उनकी मतानुसार एक ऐसी भाषा होना अनिवार्य है जिससे संपूर्ण देश के लोगों में पारस्परिक विचार विनिमय हो सके ।गुप्त जी ने 'भारत–भारती' में विदेशी शासन से मुक्ति की प्रेरणा दी है । समूचे हिंदी भाषी प्रदेश को उद्‌बोधन और प्रेरित करने में इस पुस्तक ने प्रशंसनीय कार्य किया । 'भारत–भारती' के प्रकाशन से ही गुप्त को जनमानस में राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने वाले सबसे शक्तिशाली कवि के रूप में प्रतिष्ठा मिली । वे सच्चे अर्थों में राष्ट्रकवि थे ।मैथिलीशरण गुप्त ने अपने प्रबंध काव्यों में विशुद्ध भारतीय पर्यावरण से उदात्त चरित्रों का का निर्माण किया है । उनके काव्य आरंभ से अंत तक प्रेरणा देने वाले काव्य हैं । उनके काव्य में पात्रों के व्यक्तिगत गुणों में देश–प्रेम के गुण को प्रमुखता से दिखाया गया है । वे अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्तिगत विकास के स्थान पर सामूहिक विकास पर बल देते थे ।गुप्त जी के अन्य काव्य ग्रंथों में भी राष्ट्रप्रेम और देश के प्रति त्याग व बलिदान की भावना दिखाई देती है । 'स्वदेश संगीत' में उन्होंने परतंत्रता की घोर निंदा करते हुए उसे संपूर्ण भारत के लिए अभिशाप माना है । कई स्थानों पर परतंत्र व्यक्ति को मृत मानते हुए उसका तिरस्कार किया गया है ताकि वह पराधीनता के बंधनों को तोड़ने के लिए उद्धत हो सके । 'अनघ' में भी राष्ट्रप्रेम का स्वर सुनाई देता है जिसमें गुप्त जी गांधीवाद से प्रभावित होकर सत्याग्रह की प्रेरणा देते हैं । 'वक संहार' में उन्होंने अन्याय के दमन की प्रेरणा दी है तो 'साकेत' में स्वावलंबन का पाठ पढ़ाया है । 'यशोधरा', 'विष्णुप्रिया' और 'द्वापर' में भी गुप्त जी ने राष्ट्रीयता की भावना को अभिव्यक्ति दी है । 'वैतालिकी' में उन्होंने भारतवासियों में स्वाभिमान जगाने का प्रयास किया है । द्विवेदी युग की देशभक्ति की भावना का स्वरूप भारतेंदु युगीन देश प्रेम की भावना के स्वरूप से कुछ भिन्न है । द्विवेदी युगीन देशभक्ति को पहले की अपेक्षा कहीं अधिक विकसित तथा व्यापक कहा जा सकता है । द्विवेदी युग के काव्य में देश की दुर्दशा का वर्णन करके भारत की प्राचीन संस्कृति और इतिहास के उज्ज्वल पक्षों का वर्णन किया गया है । तथा देशवासियों की हीन–भावना का निराकरण करके उनमें आत्म–गौरव की भावना को जागृत करने का प्रयास किया गया है । ऐसा करने के लिए भारतीय इतिहास के पौराणिक और ऐतिहासिक महापुरुषों की प्रशस्ति का साहित्य लिखा गया । मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए डॉ उमाकांत लिखते हैं :–"भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता होने के साथ–साथ मैथिलीशरण जी प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि थे ।उनकी प्रायः सभी रचनाएँ राष्ट्रीयता से ओतप्रोत हैं । "मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय चेतना के सम्बन्ध में प्रो हरिचरण शर्मा जी लिखते हैं :– "उन्होंने क्रियात्मक और व्यापक भूमिका पर भारतीय जनजीवन को श्रृंगार की वासनामूलक गलियों से निकालने, पराधीनता की श्रृंखलाओं को तोड़ने एवं निष्क्रियता एवं जड़ता को समाप्त करते हुए राष्ट्रीय जागृति की । पुनीत गंगा में अभिषेक का आत्मीयतायुक्त आमंत्रण दिया है । गुप्त जी की राष्ट्रीयता गांधीवादी भूमिका पर विकसित होकर तो और भी अधिक व्यापक हो गई है ।प्रमुख रचनाएँ श्री मैथिलीशरण गुप्त बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे । उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई । उन्होंने महाकाव्य, खंडकाव्य तथा मुक्तक काव्य व गीति काव्य की रचना की ।

काव्य :– झंकार, जय भारत,भारत भारती, साकेत, किसान, पंचवटी, यशोधरा, जयद्रथ वध आदि ।

नाटक :– तिलोत्तमा, चन्द्रहास, अनघ आदि ।

साहित्यिक विशेषताएँ :–श्री मैथिलीशरण गुप्त का काव्य–क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है उनके काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :–(1) **राष्ट्रीय भावना**:– राष्ट्रीय भावना गुप्त जी के साहित्य की मुख्य विशेषता है । उनकी यह राष्ट्रीय भावना कई रूपों में प्रकट होती है । देश के अतीत का गौरव गान, देश की समृद्ध संस्कृति का उद्‌घाटन करने के साथ–साथ उन्होंने देश की वर्तमान समस्याओं पर भी चिंता व्यक्त की है । 'भारत–भारती' रचना में वे न केवल भारत की अतीत का गुणगान करते हैं बल्कि उसकी वर्तमान दुर्दशा की ओर भी संकेत करते थे । इसी प्रकार 'किसान' कविता में देश के किसानों की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डाला गया है । वे देश के युवाओं को राष्ट्रीय आंदोलन के लिए भी प्रेरित करते थे ।

(2) **नारी के प्रति दृष्टिकोण**:– गुप्तजी नारी के प्रति अपार सहानुभूति रखते थे । उन्होंने अपनी कविता में उपेक्षित भारतीय नारियों को विशेष रूप से स्थान दिया है । उन्होंने यशोधरा, उर्मिला व कैकयी जैसी उपेक्षित नारियों को अपने काव्य में स्थान दिया । उन्होंने अपने काव्य में नारी के माँ, बहन और पत्नी के रूपों का वर्णन अधिक किया है । प्रेमिका रूप का कम नारी के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए कहे हैं :–"अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी ।आंचल में है दूध और आँखों में पानी ।। (3) **प्रकृति–वर्णन** :– प्रकृति के सुंदर चित्र प्रस्तुत करना भी गुप्त जी के काव्य की प्रमुख विशेषता है । आलंबनगत्त और उद्दीपनगत दोनों रूपों में वे प्रकृति का वर्णन करते हैं । 'पंचवटी' में चाँदनी रात का वर्णन करते हुए वे लिखे हैं :–

" चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही हैं जल–थल में ।
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है, अवनि और अंबर तल में ।।

(4) **भक्ति–भावना** :– गुप्त जी श्रीराम के अनन्य भक्त थे । उन्होंने श्री संप्रदाय में दीक्षा ली थी । उनकी भक्ति भावना उनके काव्य में भी नजर आती है । उन्होंने अपने काव्य में श्री राम और श्री कृष्ण दोनों को स्थान दिया । श्री राम के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए वे कहे हैं :–"राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है ।कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है ।।

(5) **गांधीवादी विचारधारा** :– गांधी जी के प्रति गुप्त जी की गहरी आस्था थी । वह गांधी जी के जीवन–दर्शन से प्रभावित थे । सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, अछूतोद्धार आदि गांधीवादी सिद्धांतों को उन्होंने अपने काव्य में स्थान दिया । गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित होकर उन्होंने मुक्तक काव्य भी लिखे तथा 'साकेत', 'द्वापर' जैसे प्रबंध काव्यों में भी गांधीवादी विचारधारा के दर्शन होते हैं ।

(6) **सांप्रदायिक सद्‌भाव** :– गुप्तजी ने अपने काव्य में सांप्रदायिक सद्‌भाव की भावना पर बल दिया है । उन्होंने अपने काव्य में सभी धर्मों और संस्कृतियों की अच्छी बातों का उल्लेख किया । 'साकेत' में उन्होंने रामभक्ति का उल्लेख किया, 'द्वापर' में कृष्ण–भक्ति का, 'काबा और कर्बला' में इस्लाम धर्म का और 'गुरुकुल' में सिख धर्म का गुप्त जी के अनुसार कोई मनुष्य चाहे हिंदू हो या मुसलमान, वह तब तक नीच ही रहता है जब तक उसमें मानवता के गुण न आ जायें ।

(7) **कला पक्ष** :– भाव पक्ष की भांति गुप्त जी का कला पक्ष भी विकसित है । उनकी भाषा सरल सहज एवं विषयानुकूल है । उन्होंने खड़ी बोली हिंदी को आकर्षक रूप प्रदान किया । तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशज आदि सभी प्रकार के शब्द उनके काव्य में मिलते हैं । मुहावरों तथा लोकोक्तियों

के प्रयोग से उनकी भाषा रोचक बन गई है । शब्दालंकार तथा अर्थालंकार दोनों प्रकार के अलंकार उनके काव्य में मिलते हैं । उन्होंने प्रबंध काव्य, मुक्तक काव्य, गीतिकाव्य आदि सभी काव्य–रूपों पर अपनी लेखनी चलाई ।

काव्य रचनाएँ :– कविता कलाप (1909), (महावीर प्रसाद द्विवेदी और गुप्त जी की कविताओं का संग्रह), रंग में भंग (1910), खड़ी बोली में रचित प्रथम रचना, बूंदी और चित्तौड़ के राजाओं के शौर्य का वर्णन जयद्रथ वध (1910), महाभारत पर आधारित पद्य प्रबंध (1912), भारत भारती (1912) , राष्ट्रीय चेतना की भावना से लिखा गया काव्य शकुंतला (1914), कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञान शाकुंतलम् का अनुवाद तिलोत्तमा (1915), चन्द्रहास (1916), किसान (1916), भारतीय किसान की करुण गाथा का वर्णन वैतालिक (1917), पत्रावली (1917),शकुंतला (1923), अनघ (1925), पंचवटी (1925),रामायण के लक्ष्मण–शूर्पणखा प्रसंग पर आधारित स्वदेश संगीत (1925),हिन्दू (1927), सैरंध्री (1927), महाभारत के कीचक प्रसंग पर आधारितवन वैभव (1927), महाभारत की कथा पर आधारित, गंधर्व चित्रयेन द्वारा दुर्योधन की पराजय तथा अर्जुन की विजय का प्रसंग वक संहार (1927), महाभारत की कथा पर आधारित, बकासुर वध के प्रसंग का वर्णन त्रिपथगा (1927), शक्ति (1927) देवी दुर्गा द्वारा दानवों का संहार विकटभट (1928), गुरुकुल (1928), सिख गुरुओं की जीवनी झंकार (1929), साकेत (1932), 12 सर्ग, रामचरितमानस पर आधारित, गुप्त जी को इसकी प्रेरणा 1908 में 'सरस्वती' में प्रकाशित महावीर प्रसाद द्विवेदी (भुजंगभूषण भट्टाचार्य नाम से), के 'उर्मिला विषयक कवियों की उदासीनता' से मिली थी , 1937 ईस्वी में इस पुस्तक के लिए हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से उन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित किया गया, यशोधरा (1932)गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा की करुण गाथा उच्छ्वास (1935), सिद्धराज (1936), सिद्धराज जयसिंह की कथा द्वापर (1936), श्रीमद्भागवत पर आधारित मंगलघट (1937), नहुष (1940), महाराज नहुष की कथा कुणालगीत (1942), कुणाल के चरित्र पर आधारित अर्जन और विसर्जन (1942), काबा और कर्बला (1942), मुस्लिम समुदाय पर आधारित, हिंदू मुस्लिम एकता के उद्देश्य से विश्व–वेदना (1943), अजित (1946), प्रदक्षिणा (1950), पृथिवीपुत्र (1950), अंजलि और अर्घ्य (1950), हिडिम्बा (1950), राक्षसी हिडिंबा और भीम की कथा जय भारत (1952), भूमि भाग (1953), राजा–प्रजा (1956), युद्ध (1956), महाभारत के युद्ध पर आधारित विष्णु–प्रिया (1957), चौतन्य महाप्रभु की पत्नी विष्णु प्रिया के त्याग की महिमा रत्नावली (1960) ।

तुलसीदास की पत्नी रत्नावली की मनोदशा पर आधारितनाट्य रचनाएँ :–

मौलिक नाटकः– लीला (अप्रकाशित), तिलोत्तमा (1916), चन्द्रहास (1918), अनघ (1927), चरणदास निष्क्रिय **प्रतिरोधसंस्कृत नाटकों का अनुवादः**– स्वप्नवासवदत्ता (भास द्वारा रचित), प्रतिमा (भास द्वारा रचित), अभिषेक (भास द्वारा रचित), आविमारक (भास द्वारा रचित), रत्नावली (हर्ष द्वारा रचित) ।

बंगाली नाटकों का अनुवादः– मेघनाथ वध (माइकल मधुसूदन दत्त द्वारा रचित), बिरहिणी वज्रांगना (माइकल मधुसूदन द्वारा रचित), प्लासी का युद्ध (नविन चंद्र सेन कृत) ।

मैथिलीशरण गुप्त संबंधी महत्वपूर्ण तथ्य :– आरम्भ में उन्होंने 'मधुप' उपनाम से कविताओं का अनुवाद किया । हिंदी साहित्य क्षेत्र में पदार्पण करने से पहले उन्होंने 'रसिकेंद्र' नाम से ब्रज भाषा में कविताएं, दोहे, चौपाई, छप्पय आदि लिखे । खड़ी बोली में छपी प्रथम कविता हेमंत (1906) (सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित) । महवीर प्रसाद द्विवेदी जी इनके गुरु थे जिनको ये अपना प्रेरणास्रोत मानते थे उनके कहने पर ही गुप्त जी ने खड़ी बोली में कविता रचना करना आरंभ किया । महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के आग्रह पर इन्होंने 'व्यासस्तवन' नामक कविता लिखी । गुप्त जी को प्रबंध शिरोमणि की उपाधि से अलंकृत किया गयाा । उपेक्षित नारी पात्रों पर सर्वाधिक लिखने वाले कवि (रविंद्र नाथ टैगोर द्वारा बांग्ला भाषा में रचित 'काव्येर उपेक्षित नार्या' लेख से प्रभावित होकर) । गुप्त जी का प्रिय छंद हरिगीतिका था । उन्हें हरिगीतिका छंद का बादशाह कहा जाता है । वासुदेव शरण गुप्त ने इन्हें 'युग कवि' की उपाधि दी । उपनाम कनकलता, स्वर्णलता, हेमलता, मधुप साहित्य– जगत में उन्हें दद्दा नाम से सम्बोधित किया जाता था । मुंशी अजमेरी से भी इन्हें बड़ा प्रोत्साहन मिला । इनकी मृत्यु पर इन्होंने 'समाधी' नामक कविता की रचना की । गुप्त जी की आरंभिक रचनाएँ कोलकाता से प्रकाशित 'वैश्योपकारक' पत्र में प्रकाशित होती थी । 'भारत भारती' रचना के बाद राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्ध हुए । मैथिलीशरण गुप्त को आधुनिक युग का तुलसीदास कहा जाता है । मैथिलीशरण गुप्त ने स्वयं को 'कौन्डविक कविमान' कहा है । गुप्त जी को अन्त्यानुप्रास का स्वामी कहा जाता है । गुप्त जी स्वतंत्रता आंदोलन में भी सक्रिय रहे । वे जेल भी गये । स्वतंत्रता के पश्चात् वे राजयसभा सदस्य भी रहे । शुक्ल जी ने कहा है "साकेत और यशोधरा गुप्त जी के दो बड़े प्रबंध हैं । दोनों में काव्यतत्व का पूरा विकास है परन्तु प्रबंधन में कमी है । शुक्ल जी के अनुसार "हिंदी कविता की नयी धारा का प्रवर्त्तक मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पाण्डेय को समझना चाहिए । शुक्ल जी के अनुसार "गुप्त जी वास्तव में सामंजस्यवादी कवि थे । प्रतिक्रिया का प्रदर्शन करने वाले अथवा मद में में झूमने वाले कवि नहीं ।

अध्ययन पद्धति :

यह आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषण पर आधारित है । साथ ही ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के आधार पर विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों एवं पुस्तकालयों से तथ्यों का संकलन किया गया है । वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर ही आधारित है।

निष्कर्ष :

गुप्त जी के साहित्य में यह प्रवृत्ति सबसे अधिक दिखाई देती है । द्विवेदी युग की राष्ट्रीय चेतना में जाति, धर्म, संप्रदाय आदि की भावना से ऊपर उठकर समस्त भारत को एक मानकर उसकी प्रशस्ति का गान किया गया है । 'हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई य आपस में सब भाई–भाई' की चेतना ही इस युग की प्रधान चेतना कही जा सकती है । जिसका श्रेय गुप्त जी को जाता है । वस्तुतः गुप्त जी का संपूर्ण साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है । उनका साहित्य जन–सामान्य के साथ–साथ राष्ट्रीय आंदोलन के बड़े नेताओं को भी निरंतर प्रेरित करता रहा । उनके साहित्य की इसी विशेषता के कारण सन 1936 में गांधी जी ने काशी में उन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से विभूषित किया ।

सन्दर्भः

1. डॉ0 उमाकांत (1964) मैथिली शरण गुप्त कवि और भारतीय संस्कृति के आख्यान, राष्ट्रीय प्रकाशन हाउस, दिल्ली ।
2. चतुर्वेदी जगदीश प्रसाद (1986) मैथिली शरण गुप्त की काव्य यात्रा, साहित्य संगम, इलाहाबाद ।
3. नवल नंद किशोर(2011)मैथिली शरण (आलोचना), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
4. नवल नंद किशोर (2014)मैथिली शरण गुप्त (संचयिता), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
5. देवी रामदुलारी (1977) मैथिली शरण गुप्त के काव्य में नीति, तत्वप्रकल्प प्रकाशन, लखनऊ ।
6. पालीवाल कृष्णा दत्त (1987)मैथिली शरण गुप्त प्रशगिकता के अंतः सूत्र, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली ।